16

उपदेश और प्रशंसाएं

कुलुस्सियों 4:7-9

कलीसियाओं के नाम अपने पत्रों में पौलुस ने अन्तिम उपदेशों के साथ और कई बार अपने सहकर्मियों को सलाम पर समाप्त किया। कुलुस्सियों के नाम पत्र में उनके सम्बन्ध में जो उसके साथ थे, अधिक व्यक्तिगत हवाले और प्रशंसाएं सामान्य से अधिक थीं। पौलुस ने पहले तो उनका नाम लिया और उनकी प्रशंसा की, जो उसका पत्र लेकर गए थे और उसके निजी दूत थे, तुखिकुस और उनेसिमुस (आयतें 7-9)। फिर उसने छह साथियों का नाम लिखा, जिन्होंने कुलुस्से के भाइयों को सलाम भेजा था (आयतें 10-14)। उसने लौदीकिया को सलाम भेजा, फिर नुकोफास और उसके घर की कलीसिया के नाम, उसके बाद अर्खिपुस के लिए उपदेश (आयतें 14-17) किया। पौलुस ने कुलुस्स्यिों के नाम व्यक्तिगत सलाम के साथ समापन किया (आयत 18)।

पौलुस ने अपने आप और अपने साथियों को उच्च अगुओं या श्रेष्ठ अधिकारियों के रूप में नहीं दिखाया, जो अन्य मसीही लोगों से पद में अधिक पवित्र होने के नाते श्रद्धेय और सम्मानित हैं। यीशु ने मनुष्यों के ऊंचा होने के विरुद्ध बोला था (मत्ती 23:6-12)। उसने कहा कि उसके चेलों में सबसे बड़े वही होंगे, जो दूसरों के सेवक होंगे। पौलुस ने अपने साथ परिश्रम करने वालों को विश्वासयोग्य सेवक, सहकर्मी, दास बताया (1:7; 4:7, 12)। यह अपने साथ काम करने वालों के साथ पौलुस के बर्ताव को और अपने साथ उसके बर्ताव को दिखाता है। सहकर्मी कहकर उसने परमेश्वर के इन सेवकों को अपने साथ मिला लिया; उसने अपने साथ कोई विशेष शब्द नहीं जोड़ा या अपने साथ उसने उत्तम होने का दावा नहीं किया।

तुखिकुस से सम्बन्धित (4:7, 8)

7प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। 8उसे मैं ने इसलिए तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को शान्ति दे।

''प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा'' (4:7)

कुलुस्सियों के नाम पौलुस का पत्र सौंपने के लिए दो दूतों का चयन किया गया था, जिन में एक स्वतन्त्र तुखिकुस था और दूसरा दास उनेसिमुस था। अकेले यात्रा के बजाय इकट्ठे होकर दोनों ने अधिक सुरक्षित महसूस करना था। इसके अलावा दोनों पौलुस की स्थिति का अधिक

विवरण दे सकते थे। उसके और उनके बीच पाए जाने वाले पारस्परिक प्रेम के बंधन ने उन्हें पौलुस के सम्बन्ध में समाचार देने के लिए अच्छे वाहक बना दिया।

तुखिकुस जिसका अर्थ ''अवसर'' या ''आकस्मिक है, पौलुस का कम प्रसिद्ध साथी था और एशिया माइनर का वासी था।'' लूका ने प्रेरितों 20:4 में पहले उसका उल्लेख किया था, परन्तु यह नहीं बताया था कि पौलुस के साथ वह कब और कहां मिला था। ऐसा लगता है कि वह पौलुस की अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर मकिदुनिया से लौटते समय मिला था। सोपत्रुस, अरिस्तर्ख, सिकंदुस, गयुस, और तिमुथियुस के साथ त्रोआस में गया था। अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा में मकिदुनिया से होते हुए जाने के बाद पिन्तेकुस्त से पहले यरूशलेम में पहुंचने के लिए दृढ़ संकल्प (प्रेरितों 20:16), पौलुस यरूशलेम की कलीसिया को दास सौंपने के लिए तुखिकुस और अन्यों को ले गया। कुछ टीकाकार उसे बहुत प्रतिष्ठित भाई मानते हैं, जिसे तीतुस के साथ उस धन को ले जाने के लिए भेजा गया, जिसे पौलुस यरूशलेम के जरूरतमंदों के लिए इकट्ठा कर रहा था (देखें प्रेरितों 24;17; 1 कुरिन्थियों 16:3; 2 कुरिन्थियों 8:16–19)।

पौलुस ने जब यह पत्र लिखा, उस समय उसके पहले कारावास के दौरान तुखिकुस रोम में उसके साथ था (इफिसियों 6:21)। वह उसके दूसरे कारावास के दौरान भी उसके साथ था (2 तीमुथियुस 4:12; तीतुस 3:12)। लूका ने यह नहीं बताया कि तुखिकुस पौलुस के साथ रोम में कैसे या कब गया।

तुखिकुस के लिए पौलुस के मन में बड़ा मान था। जिसने उसे प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक बनाया और ''तुम्हें सब बातें बताएगा, कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं'' कहा (इफिसियों 6:21)। पौलुस आम तौर पर साथी मसीही लोगों को भाई या ''भाइयों'' कहकर सम्बोधित करता था (1:1, 2; 4:7, 9, 15; 1:1 पर चर्चा देखें)।

इस पत्र में पौलुस ने तुखिकुस (4:7); चार अन्य, जिसमें इपफ्रास (1:7), उन्नेसिमुस (4:9), और लूका (4:14) और यीशु (1:13) में प्रिय शब्द का इस्तेमाल किया। मसीही लोगों को कई बार समझ नहीं आता कि जिनसे वे दूसरों से अधिक प्रेम रखते हैं, उन्हें पसन्दीदा कहना सही होगा या गलत। स्पष्टतया हमारे प्रभु की तरह पौलुस के भी पसन्दीदा लोग थे (प्रेरित यूहन्ना के लिए उसके प्रेम में यह बात दिखाई देती है; यूहन्ना 20:2; 21:7, 20.)

तुखिकुस केवल अकेला था, जिसे पौलुस ने ''विश्वासयोग्य सेवक'' (pistos diakonos) और ''विश्वासयोग्य मिनिस्टर'' (NIV) कहा। ''विश्वासयोग्य'' का अर्थ ''भरोसेयोग्य'' और ''समर्पित'' है।

विश्वासयोग्य दूत के रूप में तुखिकुस पर पौलुस को भरोसा था कि वह उसका पत्र इफिसुस में पहुंचा देगा (इफिसियों 6:21)। पौलुस के पास आधुनिक डाक सेवा की सुविधा नहीं थी जिसके कारण अपने पत्र पहुंचाने के लिए वह भरोसेयोग्य लोगों पर निर्भर था। कुछ समय के बाद पौलुस ने तुखिकुस को इफिसुस में भेजा, स्पष्टतया तीमुथियुस को राहत देने या सहायता देने के लिए, जो वहां पर काम कर रहा था (2 तीमुथियुस 4:12)। पौलुस ने उसके या अरतिमास के लिए भी तीतुस की जगह क्रेते में काम करने की योजना बनाई थी, जिससे तीतुस पौलुस के साथ जाड़ा गुज़ारने के लिए निकुपुलिस में जाए (तीतुस 3:12)।

सेवक (diakonos) का अनुवाद मिनिस्टर और डीकन हो सकता है। पौलुस ने तीन बार

डीकन की सेवा के तकनीकी अर्थ में इसका इस्तेमाल किया (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8, 12)। नहीं तो जैसा यहां है, इसका अर्थ है, जो सेवा करता है। पौलुस यह कह रहा होगा कि सेवा करने का उसे जैसा भी अवसर दिया गया, उसने उस में विश्वासपूर्ण ढंग से सेवा की।

पौलुस ने ''सहकर्मी'' शब्द (*sundoulos*) को इपफ्रास के लिए और फिर तुखिकुस के लिए लागू किया। यह एक मिश्रित शब्द है: *sun*, ''के साथ'' के साथ *doulos*, ''दास।'' यीशु ने इस शब्द का इस्तेमाल किया (देखें मत्ती 18:28; 24:49), जैसे यूहन्ना ने किया (प्रकाशितवाक्य 6:11; 19:10; 22:9)। पौलुस अपने आपको यीशु का दास मानता था और तुखिकुस को प्रभु में अपने साथी बंधुआ के रूप में देखता था। अपने मसीही लोगों के साथ पौलुस और तुखिकुस को क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा यीशु के लहू से खरीदा गया था; इस कारण वे दास बंधुओं के रूप में उसके थे। पौलुस ने ''मसीह में'' से कम बार प्रभु में वाक्यांश का इस्तेमाल किया, चाहे इसका अर्थ वही है (देखें 1:2, 4, 28; 2:5)। तुखिकुस ''प्रभु में'' था, इस कारण वह एक देह अर्थात कलीसिया अर्थात विश्वासियों की मण्डली में एक नई सृष्टि था। पौलुस ने यह अन्तर इसलिए किया ताकि कुलुस्से के लोगों को पता चल जाए कि तुखिकुस केवल उसके साथ जाता और उसकी सेवा भी नहीं करता था बल्कि वह एक साथी विश्वासी था।

''उसे मैं ने इसलिए तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को शान्ति दे'' (4:8)

भेजा है (*epempsa*) पूरा हो गए काम को दिखाता है। पौलुस उनके दृष्टिकोण से लिख रहा था, जिन्होंने पत्र को पढ़ना था। वह लिखने के अपने समय के सम्बन्ध में वर्तमान ''मैं भेज रहा हूं'' का इस्तेमाल कर सकता था परन्तु पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं द्वारा कुलुस्से में पढ़े जाने के समय तुखिकुस पहले ही कुलुस्से में था। इस कारण पौलुस ने अपने बजाय उनको ध्यान में रखते हुए लिखा।

तुखिकुस के आने का एक उद्देश्य था कि [उनके] हृदयों को शांति मिले। ''शांति दे'' (*parakaleō*) *para* के साथ, ''और'' *kaleō* ''बुलाना'' के मेल वाला मिश्रित क्रिया शब्द है: इसका मूल अर्थ किसी को पास बुलाना अर्थात आने के लिए कहना है (प्रेरितों 16:39; 28:20; रोमियों 12:1; 1 कुरिन्थियों 1:10)। इसका इस्तेमाल प्रोत्साहन या सांत्वना या दिलेरी देने के लिए हो सकता है (2 कुरिन्थियों 1:4; 7:6; कुलुस्सियों 2:2; 4:8)। इसी शब्द का एक और रूप *paraklētos* पवित्र आत्मा (यूहन्ना 14:16, 26; 15:26; 16:7) और यीशु (1 यूहन्ना 2:1) के सम्बन्ध में किया गया है, जिसका अर्थ सहायता देने के लिए पास रहने वाला सहायक है।

उनेसिमुस के सम्बन्ध में (4:9)

[9]और उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है, जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से है, ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे।

''और उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से है'' (4:9)

उनेसिमुस तुखिकुस के साथ था। इस नाम का मूलतया अनुवाद ''लाभदायक'' या ''उपयोगी'' है। यह लिखते समय कि उनेसिमुस पहले अपने स्वामी के ''कुछ काम का न था'' और ''लाभदायक न'' था, परन्तु उसके और पौलुस के लिए ''काम का'' और ''उपयोगी'' बन गया था, पौलुस शब्दों का खेल इस्तेमाल कर रहा हो सकता है (फिलेमोन 11, 20)। उसका नाम साधारण था, विशेषकर दासों के बीच, जिससे कुछ लोगों को संदेह है कि वह फिलेमोन के नाम पत्र वाला दास है भी है या नहीं। अधिक सम्भावना है कि वह फिलेमोन का ही होगा क्योंकि पौलुस के पत्र में पहले फिलेमोन का नाम दिया गया है, जो इस बात का संकेत है कि यह पत्र मुख्यतया उसी के लिए था। कुछ लोगों ने इस तथ्य को दिया है कि फिलेमोन के नाम पत्र अपफिया और अरिखिकुस के नाम भी लिखा गया था इसलिए यह उनका दास था (फिलेमोन 2)।

तुखिकुस के विपरीत इफिसियों के पत्र में उनेसिमुस का नाम नहीं है या उसे ''सेवक'' नहीं कहा गया (देखें 4:7; इफिसियों 6:21)। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि वह सुसमाचार का सिखाने वाला नहीं था, परन्तु केवल एक विश्वासी मसीही था, या पौलुस उसे किसी सांसारिक स्वामी के दास या शायद पौलुस चाहता नहीं था कि उसे किसी सांसारिक व्यक्ति का दास या सेवक माना जाए।

कुलुस्सियों को उनेसिमुस का पता केवल एक भगौड़े दास के रूप में होगा, न कि एक मसीही के रूप में (फिलेमोन 10-20)। पौलुस द्वारा उसका नाम लेने से यह संदेश गया कि उनेसिमुस एक विश्वासी दास से विश्वासयोग्य और प्रिय भाई बन गया था। इन शब्दों से उसकी प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़ा क्योंकि पौलुस ने उसके लिए लगाव के उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया जिनका दूसरों के लिए किया था। ऐसा उसने शायद कुलुस्सियों को यह ज़ोर देने के लिए किया कि स्वामियों और स्वतन्त्र लोगों को जो उनके साथी मसीही हैं, दासों के साथ प्रेम करना चाहिए।

उनेसिमुस को पौलुस द्वारा रोम में जेल में रहते समय परिवर्तित किया गया था। यह तथ्य इस बात से स्पष्ट होता है, ''मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से विनती करता हूं'' (फिलेमोन 10)। पौलुस चाहे उसकी सहायता चाहता था परन्तु वह उसे उसके स्वामी की सलाह के बिना अपने पास नहीं रखना चाहता था, जिस कारण उसने उनेसिमुस को उसके स्वामी के पास लौटा दिया। फिलेमोन के नाम अपने पत्र में पौलुस ने विनती की कि उसे दास के रूप में नहीं, बल्कि प्रभु में प्रिय भाई के रूप में ग्रहण किया जाए। यदि उसे कोई आर्थिक हानि हुई थी चाहे वह उनेसिमुस द्वारा धन दिए जाने के कारण हो या उसके न होने के कारण हुई हो, पौलुस उस राशि को पूरा करने को तैयार था (फिलेमोन 18, 19)। फिलेमोन के नाम पत्र को सम्भालकर रखा जाना इस बात का संकेत हो सकता है कि उनेसिमुस को स्वतन्त्र कर दिया गया था।

पौलुस ने यह कहते हुए कि वह ''अपने बच्चे,'' ''मेरे ... बड़े काम का,'' ''मेरे हृदय का टुकड़ा,'' ''प्रिय भाई'' उनेसिमुस के लिए अपने धन्यवाद को जताया और यह कहते हुए कि ''अपने पास रखना चाहता था कि वह ... मेरी सेवा करे'' (फिलेमोन 10-13, 16)। ''विश्वासयोग्य और प्रिय भाई'' वाक्यांश से कुलुस्सियों को उनेसिमुस को अनुग्रहपूर्वक देखने

और अपनी संगति में उसे ग्रहण करने में सहायता मिली, एक भगौड़े दास के रूप में नहीं बल्कि मसीह में भाई के रूप में। अब वे उसमें भरोसा कर सकते थे चाहे वह भगौड़ा ही था। दास और स्वतन्त्र एक समान रूप में परमेश्वर की संतान बन सकते हैं (गलातियों 3:26-28)।

स्पष्टतया कुलुस्सियों को उन्नेसिमुस का पता [उन] ही में से के रूप में जाना। यदि पौलुस के कहने का अर्थ यह था तो फिलेमोन, जो उनेसिमुस का स्वामी या पूर्व स्वामी था, भी कुलुस्से से हो सकता है। हो सकता है कि ऐसा न हो, परन्तु यदि फिलेमोन कुलुस्से में रहता था, तो पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम भेजे अपने सलाम में उसका नाम क्यों नहीं लिया? कुछ लोग यह मानते हैं कि उसने उसका नाम नहीं लिखा क्योंकि इसी दौरे पर उनेसिमुस भी फिलेमोन को निजी पत्र दे रहा था।

''ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे'' (4:9)

कुलुस्सियों के नाम पत्र देकर तुखिकुस को भेजने का पौलुस का दोहरा उद्देश्य था: पौलुस के पाठकों को प्रोत्साहित करना और लिकुस तराई में भाइयों को पौलुस की स्थिति बताना। प्रेरित ने यह कहते हुए कि वे बता देंगे कि रोम में उसके साथ क्या हो रहा है, साथियों की अपनी सूची में अपने पहले पत्र को देने वालों के नाम लिखे। सम्भवतया कुलुस्सियों को पता चल गया था कि पौलुस जेल में था। परन्तु उन्हें वहां उसकी स्थिति के बारे में इतना पता नहीं था। जेल में रहते हुए भी पौलुस की निडरता और सफलताओं के समाचार ने उन्हें प्रोत्साहित करना था। पौलुस ने दूतों के मिशन को तीन बार बताया। पहले उसने कहा, ''तुखिकुस ... मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा'' (4:7)। फिर उसने कहा कि तुखिकुस को इसलिए ''भेजा है कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए'' (4:8)। तीसरा उसने कहा कि यह [तुखिकुस और उनेसिमुस] तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे।

पत्र में अपनी स्थिति के बारे में पौलुस ने अपनी किसी भी जानकारी को खोलकर नहीं बताया। कइयों का मानना है कि जेल की अंवाछित स्थितियों का लिखित विवरण उसके साथ दुर्व्यवहार का कारण बन सकता था या उसके लिए खतरा हो सकता था, यदि उसके पत्र को पढ़ लिया जाता। परन्तु इस विचार का आधार नहीं है क्योंकि रोम में उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था। लूका ने लिखा है, ''जब हम रोम में पहुंचे, तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई'' (प्रेरितों 28:16)। ''और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक-टोक निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा'' (प्रेरितों 28:30, 31)।

स्पष्टतया कुलुस्सियों के लिए पौलुस की इच्छा थी कि उन्हें पत्र में शामिल करने के लिए व्यावहारिक के बजाय पूरा विवरण मिल जाए। पूरी मौखिक रिपोर्ट सुनने के बाद पत्र के प्राप्त करने वाले पौलुस की स्थिति की और बातें जानने के लिए प्रश्न पूछ सकते थे। इफिसियों के नाम पत्र में पौलुस ने कहा कि तुखिकुस ने उन्हें उसकी परिस्थितियों का पूरा विवरण दे देना था (इफिसियों 6:21)।

वह नज़रबन्द था इसलिए पौलुस की स्थिति यदि जेल की कोठरी से मिलाई जाए तो बेहतर थी। तुखिकुस और उनेसिमुस की रिपोर्ट से कुलुस्सियों के मनों में यह सोचने से राहत मिलनी

थी कि वह जेल की असहनीय स्थितियों में कष्ट भोग रहा है। यह दूत मसीही लोगों को ''सारी'' (*panta*) बातें बता सकते थे कि पौलुस के साथ क्या-क्या हो रहा है यानी वह सब नहीं जो पौलुस भोग रहा था बल्कि वे ''सारी बातें'' जो उसकी स्थिति को जानने के लिए आवश्यक थीं। परमेश्वर के प्रकाशन की मौखिक प्रस्तुति पर निर्भर रहने के बजाय पौलुस के पत्र भेजने का कारण यह था कि न तो तुखिकुस और उनेसिमुस को अधिकार था या वह प्रेरणा थी, जो पौलुस को मिली थी। कुलुस्सियों को उसका लिखित संदेश मिलने से उन्हें वे सही-सही शिक्षाएं मिल गईं, जिन्हें उन्हें बार-बार सिखाना था। कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर भी कुलुस्सियों के पत्र के महान संदेश को आने वाली पीढ़ियों के लिए वफ़ादारी से सम्भालकर रखने का इच्छुक था।

कई प्रश्न जो हम पूछ सकते हैं इस पत्र के अन्तिम भाग में उनका उत्तर नहीं दिया गया है। उदाहरण के लिए यदि फिलेमोन और उपफगिया (फिलेमोन 1, 2) कुलुस्से में रहते थे, जो उनेसिमुस का पुराना घर था, तो पौलस ने उन्हें सलाम क्यों नहीं लिखा? आज पाठकों को मरकुस, कुलुस्सियों की ओर से इपफ्रास के संघर्षों, नोफास के उल्लेख, लौदीकिया के साथ पत्रों के विनिमय की तार्किकता और अरखिकुस को दिए गए उपदेश पर पौलुस के निर्देशों पर आश्चर्य हो सकता है। यह प्रश्न चाहे रहस्य बने रहे, परन्तु पौलुस के पत्र के मूल पाठकों को इस बात की समझ आ गई थी कि वह उन्हें क्या बता रहा है।

प्रासंगिकता

भाइयों को रिसोर्स देना

कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने व्यक्तिगत बातें शामिल नहीं कीं। जब तुखिकुस और उनेसिमुस ने कुलुस्से में पहुंचकर उसकी परिस्थितियों और गतिविधियों की रिपोर्ट देनी थी। पौलुस पूरी रिपोर्ट देने के लिए अपने विश्वसनीय दूतों पर भरोसा कर सकता था।

पौलुस कुलुस्सियों को क्यों बताना चाहता था कि उसका क्या हाल है? कुछ सम्भावित कारण हैं कि वह उन्हें बताने को उत्सुक था कि उसके लिए अपनी प्रार्थनाओं में वे क्या शामिल करें। सुसमाचार के फैलाव के बढ़ने से प्रोत्साहित हों, प्रभु के लिए कठिन परिश्रम करने के लिए उसके नमूने से प्रेरित हों, या परमेश्वर के वचन की सफलता पर उसके साथ आनन्द करें। यदि उसे आवश्यकता होती तो वे उसकी आर्थिक सहायता भेज सकते होंगे या उसे प्रोत्साहित करने के संदेश दे सकते होंगे। मण्डलियों के लिए अपने मिशनरियों के साथ आज सम्पर्क में बने रहने के लिए ये अच्छे कारण हैं।

प्रचार की रिपोर्टें आवश्यक हैं। अन्य मसीही लोगों को मिशनरियों की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है और समर्पित लोगों को संवाद के लिए चुना जाना चाहिए। मण्डलियों को प्रचार की रिपोर्टें चाहिए। यदि सदस्यों को सूचित किया जाता है तो वे मिशन कार्य में और दिलचस्पी लेंगे। उन्हें पता है कि क्या हो रहा है इसलिए वे अपनी प्रार्थनाओं में उस काम को रखेंगे और उन्हें समझ होगी कि परमेश्वर से क्या पाना है।

अपनी मिशनरी यात्राओं से वापस आकर पौलुस अन्ताकिया को चला गया, जहां उसने आरम्भ किया था। पौलुस के अपने पहली मिशनरी यात्रा से लौटने के विषय में लूका ने लिखा है, ''वहां

पहुंचकर, उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए! और अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया'' (प्रेरितों 14:27)।

कुछ प्रचारक निराश हो जाते हैं कि जो आर्थिक रूप में उनकी सहायता करते हैं वे उनके साथ संवाद नहीं करते। मिशन क्षेत्र में रहने वालों और स्थानीय मण्डली के बीच संवाद होना आवश्यक है ताकि दोनों को पता चले कि एक-दूसरे के साथ कैसे जुड़ना है।

प्रचारकों के काम और परिस्थितियों को समझना प्राथमिकता होनी चाहिए। जब काम ठीक ठाक चल रहा हो तो प्रचारक दूसरों के साथ उसे साझा करना चाहते हैं। यदि वे परेशानियां झेल रहे हों तो उन्हें विशेष सहायता और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है, परन्तु हो सकता है कि वे अपनी परेशानियां न बताएं। सहायता करने वाली ज़िम्मेदार मण्डलियां अपने प्रचारकों के साथ संवाद की लाइन खुली रखती हैं।

सहायता करने वाली मण्डलियों और प्रचारकों के बीच जानने के लिए विश्वासी और समर्पित दूतों को जुड़ना चाहिए। सम्भव हो तो ऐल्डरों को दिए जा रहे काम की समीक्षा और उस काम में लगे लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए कम से कम साल में एक बार लोगों को भेजना चाहिए। पत्र, टेलीफोन और ई-मेल बेशक सहायक हैं, परन्तु मिशन क्षेत्र में जाने वालों का विकल्प नहीं हो सकते।

पौलुस कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र में अपनी परिस्थितियों का वर्णन कर सकता था, परन्तु कागज पर लिखे शब्द अपनी बात उस ढंग से नहीं कह पाते जैसे मुंह से बोले गए शब्द। संक्षिप्त लिखी रिपोर्ट हो सकता है कि पिछली रिपोर्ट जितनी दिलचस्प या पूरी न हो। इसके अलावा दूसरों को काम पूरी तरह समझ पाने के लिए सवाल किए जा सकते हैं।

भाइयों को खबर देना वचन के अनुसार है और सहायता करने वाली मण्डलियों और उनके प्रचारकों के बीच अच्छे सम्बन्धों के लिए आवश्यक है। योगदान देने वालों को दूर से मिली अच्छी खबर सुनकर लाभ मिलता है और प्रचारकों को यह जानकर लाभ मिलता है कि उनके और उनके काम के लिए प्रार्थना करने वाले विश्वासी भाई और बहने हैं।

प्रशंसनीय सहकर्मी तुखिकुस (4:7-9)

तुखिकुस की खूबियों से पता चलता है कि मसीही में क्या विशेषता होनी चाहिए। मसीह के लिए दूसरों के साथ काम करते हुए हमारा जीवन ऐसे हो जैसे पौलुस तुखिकुस को देखता था। इसके अलावा जब हम अपने सहकर्मियों में अच्छे गुणों को देखते हैं तो हमें उनकी प्रशंसा करनी चाहिए, जैसे पौलुस करता था। ध्यान दें कि वह तुखिकुस को कैसे बुलाता था:

प्रिय भाई। मसीही लोगों को प्रेम में एक-दूसरे से बंधे होना आवश्यक है। प्रभु में वफ़ादारी से रहने वाले लोग प्रेम और सम्मान के हक्कदार हैं। कई बार सेवा करने के इच्छुक लोग ईर्ष्या के कारण अन्य कर्मियों के साथ प्रेम नहीं रख पाते। ऐसा कभी नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसी भावनाएं प्रतिस्पर्धा और झगड़े का कारण बन सकती हैं।

''विश्वासयोग्य सेवक।'' विश्वासी मसीही लोगों को यीशु के साथ नये जीवन की आशा (1 कुरिन्थियों 15:19, 20, 58), स्वर्ग में अनन्त जीवन (1 पतरस 1:3, 4), और यीशु की समानता में बदलने (1 यूहन्ना 3:2, 3) के कारण मृत्यु तक यीशु के वफ़ादार रहते हैं

(प्रकाशितवाक्य 2:10)। पक्की स्थिरता सताव, निराशा, अविश्वासी भाइयों, शैतान की परीक्षाओं का सामना करने से खत्म नहीं हो जाती।

''सहकर्मी।'' जो लोग पाप करते हैं, वे पाप के सेवक हैं, परन्तु वे यीशु की आज्ञा मानकर धार्मिकता के सेवक बन सकते हैं (रोमियों 6:17, 18)। परमेश्वर के सेवकों को उसकी सेवा में इकट्ठे मिलकर काम करना आवश्यक है। मसीही लोगों को यीशु के लिए काम करने में पौलुस और तुखिकुस के बीच एकता के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

तुखिकुस विश्वासयोग्य दूत का उदाहरण है। उसे नमूने के रूप में इस्तेमाल करते हुए हम देखते हैं कि मसीही व्यक्ति को निम्न बातें करने की कोशिश करनी चाहिए।

(1) भरोसे योग्य बनो। पौलुस अपनी स्थिति इस प्रकार से बताने के लिए तुखिकुस पर भरोसा कर सकता था, जिससे पौलुस प्रसन्न हो। जो लोग दूसरों की ओर से बात करते हैं उन्हें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि जो कुछ वे करते हैं, बिल्कुल सही है। झूठी रिपोर्ट देना प्रतिष्ठा के लिए खतरा और मण्डली के लिए हानिकारक हो सकता है। कई बार मसीही लोगों के लिए हर बात को, जिसे वे जानते हों (चाहे वह सही भी हो) बताने से बचना आवश्यक होता है। याकूब ने लिखा है, ''हे भाइयो, एक-दूसरे की बदनामी न करो'' (याकूब 4:11)।

दूसरों, विशेषकर अपने साथी मसीही लोगों के बारे में बोलने से पहले आइए अपने आप से यह सवाल पूछें:

''क्या यह सही है?''
''क्या यह अच्छा है?''
''क्या मुझे इसे दोहराना चाहिए?''
''इससे सहायता मिलेगी या हानि होगी?''
''क्या मैं अपने बारे में दूसरों से ऐसे ही बातें सुनना चाहूंगा?''
''जो कुछ मैं कहने वाला हूं क्या न्याय के दिन वह मुझे यीशु के सामने सही ठहरा सकता है?''

(2) प्रोत्साहित करने वाले बनें। दूसरों को प्रोत्साहित करने की तुखिकुस की योग्यता के बारे में कुछ पता नहीं है। मसीही के रूप में जो प्रोत्साहित करने की अपनी योग्यता के लिए प्रसिद्ध था बरनबास अच्छा उदाहरण है। इसलिए प्रेरित उसे ''शांति का पुत्र'' कहते थे (प्रेरितों 4:36)। वह पौलुस को अपने साथ ले गया और उसे स्वीकार करने के लिए प्रेरितों को उसने मना लिया (प्रेरितों 9:27)। प्रेरितों द्वारा अन्ताकिया में काम के साथ सहायता के लिए बरनबास को चुना जाने के बाद वह काम में पौलुस के साथ जुड़ गया। बाद में उसने मरकुस को प्रभु के उपयोगी सेवक में बदलने में सहायता की (2 तीमुथियुस 4:11)।

(3) विश्वासयोग्य बनें। तुखिकुस और उनेसिमुस ने एक अच्छी टीम बना ली होगी। वे मिलकर काम करते थे चाहे उनेसिमुस एक दास ही था। मसीही लोगों को प्रभु के लिए इकट्ठे काम करना सीखना आवश्यक है, उनकी पृष्ठभूमि का समाज में पद चाहे जो भी हो। यीशु अपने चेलों को अपनी समानता में बदल सकता है ताकि वे साथी मसीही लोगों के साथ मिलकर काम कर सकें।